समाजीकरण के उद्देश्य (Aims of socialization)

समाजीकरण से व्यक्ति या समाज को क्या-क्या लाभ है इस पर विभिन्न विद्वानों ने भिन्न-भिन्न मत व्यक्त किए है। थ्रूम एवं सेल्सनिक ने समाजीकरण के उद्देश्य को निम्नलिखित ढंग से बताए है:—

(1) समाजीकरण अनुशासन का पाठ पढ़ाता है:—

समाजीकरण की प्रक्रिया के द्वारा व्यक्ति का आचरण समाज में अनुशासित होता है। समाजीकरण के अभिकरण व्यक्तियों को यही सीखाते कि उन्हें कौन सा आचरण करना चाहिए और कौन सा आचरण नहीं करना चाहिए। समाजीकरण के द्वारा जीवन में अनुशासन की महत्ता का ज्ञान होता है। धीरे-धीरे अनुशासन व्यक्तियों के व्यक्तित्व का अभिन्न अंग बन जाता है और वे सामाजिक नियमों के अनुरूप व्यवहार करने लगते है

(2) समाजीकरण प्रेरणा का स्रोत है:—

समाजीकरण के द्वारा व्यक्तियों में सिर्फ अनुशासन ही नहीं आता, बल्कि समाजीकरण व्यक्तियों को अनुशासित ढंग से कुछ करने के लिए प्रेरित भी करता है। किसी व्यक्ति को जीवन में क्या बनना चाहिए, क्या हासिल करना चाहिए या क्या नहीं बनना चाहिए। इसका ज्ञान समाजीकरण के द्वारा ही होता है। कोई व्यक्ति कवि बनना चाहता है, तो कोई बहुत बड़ा सर्जन, कोई बहुत बड़ा खिलाड़ी बनना चाहता है, तो कोई बहुत बड़ा वैज्ञानिक बनना चाहता है। इस प्रकार

बहुत बड़ी - बड़ी चीजें होती है जिन्हें व्यक्ति अपने जीवन में प्राप्त करना चाहता है इसकी प्रेरणा उसे समाज से मिलता है। समाज में रहकर व्यक्ति या तो स्वयं जीवन के लक्ष्यों के बारे में सीखता है या उसे दूसरे लोग कुछ प्राप्त करने के लिए प्रेरित करते हैं।

(3) समाजीकरण सामाजिक भूमिका का पाठ पढ़ाता है:—

किसी व्यक्ति को किस परिस्थिति में कैसा आचरण करना चाहिए, इसका ज्ञान उसे समाजीकरण के द्वारा ही प्राप्त होता है। प्रत्येक समाज यही चाहता है कि उसके सदस्य समाज के स्वीकृत मूल्य एवं मानदण्डों को ध्यान में रखकर ही आचरण करें, क्योंकि समाज का कल्याण उसी में है।

(4) समाजीकरण कुशलता प्रदान करता है:—

समाज में विभिन्न प्रकार के काम-काज होते हैं, जिन्हें करने के लिए काफी कुशलता की जरूरत होती है। आजकल श्रम-विभाजन में इतना अधिक विशिष्टीकरण हो गया है कि प्रत्येक व्यक्ति प्रत्येक काम को नहीं कर सकता है।

(5) समाजीकरण के द्वारा व्यवहारों में अनुरूपता आती है:—

समाजीकरण का एक प्रमुख उद्देश्य यह है कि समान परिस्थिति में तमाम लोग समान व्यवहार करें। कोई भी समाज मनमाने ढंग से अपने सदस्यों को व्यवहार करने की अनुमति प्रदान नहीं करता है। जिस प्रकार जनजातियों समाज, हिन्दू समाज और मुस्लिम समाज में विवाह प्रथा अलग-अलग है। इसका कारण यह है कि वे अपनी सामाजिक मान्यताओं के अनुरूप अपना व्यवहार करते हैं।